GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

RECORD OF PARTICIPATIVE LEARNING 2023-24

DEPARTMENT OF HISTORY

कार्यालय-प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)
Web site- www.digvijaycollege.com Email: principal@digvijaycollege.com ☎: & Fax 07744-296331
College Code : 1901

छत्तीसगढ़ के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी शहीद वीरनारायण सिंह

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के इतिहास विभाग में शहीद वीरनारायण सिंह जयंती मनाई गई। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.के.एल.टांडेकर ने कहा कि वीरनारायण सिंह छत्तीसगढ़ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। नारायण सिंह का जन्म 1795 में बिझवार जनजाति में हुआ था। 1856 में छत्तीसगढ़ क्षेत्र में अल्पवर्षा के कारण भयंकर अकाल पड़ा तब वीरनारायण सिंह ने ब्रिटीश कम्पनी को कर देने में समर्थता व्यक्त की और सहायता का निवेश किया। संकट की इस घड़ी में कुछ व्यापारियों ने अनाज को दबाकर रखा था। कस्डोल के एक व्यापारी माखन ने अपने गोदाम में अनाज जमा कर रखा था, उसे अपने कब्जे में कर वीरनारायण सिंह ने किसानों को बांट दिया था। व्यापारी की शिकायत पर नारायण सिंह पर लूटमार और डकैती का आरोप लगाकर 24 अक्टूबर 1856 को रायपुर जेल में डाल दिया गया था। विभागध्यक्ष डॉ.शैलेन्द्र सिंह ने कहा कि 1857 का विद्रोह जब प्रारंभ हुआ उसकी हलचल छत्तीसगढ़ में भी हुआ। 28 अगस्त 1857 को नारायण सिंह जेल से भागने में सफल हो गये। नारायण सिंह जानते थे कि ब्रिटीश सरकार उन पर कार्यवाही करेगी।

अतः उन्होंने 500 सैनिकों की सेना संगठित की थी। सोनाखान पर आक्रमण की जिम्मदारी कर्नल स्मित को सौंपी गई। नारायण सिंह गिरफ्तार कर लिए गए। डिप्टी कमिश्नर इलियेट ने लिखा था :– मेरे कोर्ट के समक्ष जमीदार को प्रस्तुत किया गया और उस पर 1857 की अधिनियम की धारा 6 एक्ट 14 के अंतर्गत उस पर अभियोग लगाया गया। मैंने उसे फांसी की सजा सुनाई। कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रोफेसर होरेन्द्र बहादुर ठाकुर ने कहा कि नारायण सिंह के रूप में अंग्रेजों के समक्ष चुनौती कितनी बड़ी थी, इसका अंदाज इस बात से लगता है कि नारायण सिंह को फांसी दिए जाने के बाद सरकार ने उन जमीदारों को पुरूस्कार किया, जिन्होंने नारायण सिंह के विद्रोह के दमन में उनकी मदद की इस अवसर पर प्राचार्य डॉ.टांडेकर द्वारा वीरनारायण सिंह से संबंधित प्रश्न पूछा गया और विभाग के उत्तर देने वाले विद्यार्थियों वैशल्या, पेमिन धारगवे, वर्षा साहू, नेमचंद–साहिल रावटे को पुरूस्कार दिया गया। इस अवसर पर डॉ.अजय शर्मा, डॉ.हेमलता साहू तथा एम.ए.के विद्यार्थी उपस्थित थे।

कार्यालय-प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)
Web site- www.digvijaycollege.com Email: principal@digvijaycollege.com ☎: & Fax 07744-296331
College Code : 1901

इतिहास विभाग में शिक्षक अभिभावक सम्मेलन आयोजित

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के इतिहास विभाग में शिक्षक अभिभावक सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रारंभ में प्राचार्य डॉ.के.एल. टांडेकर द्वारा अभिभावकों को महाविद्यालय से प्रदान की जाने वाली सुविधाओं से अवगत कराया तथा उन्होंने पालकों को कहा कि आप हमेशा अपने बच्चों से उनकी पढ़ाई के बारे में जानकारी प्राप्त करते रहें तथा महाविद्यालय के विकास से संबंधित अगर कोई सुझाव प्रदान करते हैं, तो अवश्य उस पर अमल किया जाएगा।

विभागाध्यक्ष डॉ.शैलेन्द्र सिंह ने अभिभावकों को विभाग द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी दी साथ ही विभाग द्वारा वर्ष में राष्ट्रीय भ्रमण द्वारा विद्यार्थियों को होने वाले लाभों के बारे में बताया। महाविद्यालय द्वारा संचालित विवेकानंद कोष की भी जानकारी प्रदान की गई। विभाग में समय–समय पर प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने हेतु विभिन्न विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता है, जिससे उनके अनुभव का लाभ विद्यार्थी प्राप्त कर सके।

उपरोक्त सभी अभिभावकों ने महाविद्यालय तथा विभाग से मिलने वाली सुविधाओं पर अपनी असंतुष्टि जाहिर की। इस अवसर पर अभिभावकगण श्री पुरूषोत्तम तिवारी, श्री गौतमराय यादव, श्री सच्चिदानंद सोनकर, श्री चैतराम साहू, श्रीमती सुशीला बाई साहू, श्रीमती रहमत बेग, प्रतिभा देवांगन, श्री निखिल दास वैष्णव, श्रीमती हेमबाई साहू, श्री भोजराम साहू तथा अन्य अभिभावक उपस्थित रहे। संचालन प्रो. हिरेन्द्र बहादुर ठाकुर तथा आभार हेमलता साहू द्वारा किया गया।

(डॉ. के.एल.टांडेकर)
प्राचार्य
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगॉव (छ.ग.)

कार्यालय-प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)
Web site- www.digvijaycollege.com Email: principal@digvijaycollege.com ☎: & Fax 07744-296331
College Code : 1901

इतिहास विभाग में मनाया गया सुभाषचंद्र बोस जयंती

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा सुभाषचंद्र बोस जयंती मनाई गई। प्राचार्य डॉ.के.एल.टांडेकर मुख्य वक्ता श्री जितेन्द्र साखरे सहा.प्राध्यापक इतिहास, रानी रश्मि देवी महाविद्यालय, खैरागढ़, विभागाध्यक्ष डॉ.शैलेन्द्र सिंह द्वारा सुभाषचंद्र बोस के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने कहा कि वीर सावरकर ने सुभाषचन्द्र बोस की क्षमता को पहचाना तथा छोटै–छोटे आंदोलनों में शक्ति व्यय करने के स्थान पर कोई ठोस कार्य करने के लिए कहा। उन्होंने सुभाषचन्द्र बोस को राय दी कि उन्हे देश के बाहर जाकर अन्य देशों से सहायता लेकर भारत को स्वतंत्रता के प्रयत्न करने चाहिए। सुभाषचन्द्र बोस ने रूस, इटली, जर्मनी आदि देशों से सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया। जर्मनी सरकार से मिलने के बाद उन्होंने फ्री इंडिया सेन्टर की स्थापना की। प्राचार्य डॉ.के.एल.टांडेकर ने कहा कि 1923 में चितरंजन दास द्वारा सुभाष को स्वराज दल का महामंत्री का कार्य सौंपा गया। उनके प्रयासों से कलकत्ता नगर निगम के चुनावों में स्वराज दल की सफलता मिली। उन्होंने कलकत्ता की सड़कों के नाम अंग्रेजी के नाम से बदल कर भारतीय महापुरूषों के नाम कर दिए। गांधीजी से वैचारिक मतभेद होने के कारण उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर "फारर्वड.ब्लाक" नामक दल बनाया। मुख्य वक्ता श्री जितेन्द्र साखरे ने कहा कि सुभाष बचपन से ही स्वतंत्रता प्रेमी थे। सुभाषचंद्र बोस पर विवेकानंद का काफी प्रभाव था। उन्होंने 1920 में आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की किंतु अंग्रेजी शासन के अधीन नौकरी करना स्वीकार नही किया। 22 सितम्बर 1944 को सुभाष बोस ने "शहीद दिवस" मनाया तथा घोषणा की "हमारी मातृभूमि स्वतंत्रता की खोज में है। तुम मुझे अपना खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा" दूर्भाग्यवश उनका यह स्वप्न पूरा पूरा न हो सका। 21 अक्टूबर 1943 को सुभाषचन्द्र बोस ने अस्थाई सरकार की स्थापना की जिसे जापान, जर्मनी, चीन, इटली, कोरिया, फिलिपिंग आदि देशों ने मान्यता दी थी कार्यक्रम का संचालन एम.ए.पूर्व की छात्रा प्रगति नोन्हारे ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ. अजय शर्मा द्वारा किया गया।

कार्यालय-प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)
Web site- www.digvijaycollege.com Email: principal@digvijaycollege.com ☎: & Fax 07744-296331
College Code : 1901

इतिहास विभाग में इतिहास दर्शन पर व्याख्यान

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के इतिहसय विभाग में इतिहास दर्शन विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रारंभ में इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.शैलेन्द्र सिंह ने व्याख्यान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला और कहा कि इतिहास दर्शन का उद्देश्य स्वयं का चिंतन विश्व इतिहास तथा इतिहास के सामान्य नियमों से है। इसे इतिहास दर्शन की संज्ञा दी जा सकती है। मुख्यवक्ता डॉ.आशा चौधरी शासकीय नेहरू महाविद्यालय डोंगरगढ़ ने इतिहास दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इतिहास घटनाओं में से एक घटना मात्र को देखता है, जबकि दर्शन इतिहास के प्रामाण्य अर्थ और वास्तविकता को निश्चित करने का दावा करता है। इतिहास के प्रामाण्य का प्रश्न नही उठता। जो सफल होता है उसी का इतिहास होता है। इतिहास में मार्क्स का महत्व लेनिन और स्टालिन के कारण है। अन्यथा मार्क्स का पता केवल सामाजिक विज्ञान तक ही सीमित रहता। परिणाम स्वरूप इतिहास दर्शन का अभिप्राय अतित कालीन घटना के निहित मानसिक प्रक्रिया अथवा विचार को वर्तमान और भविष्य में प्रतिरोधित करना मात्र होता है।

कार्यक्रम का संचालन प्रो.हिरेन्द्र बहादुर ठाकुर तथा आभार डॉ.हेमलता साहू द्वारा किया गया।

कार्यालय-प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)
Web site- www.digvijaycollege.com Email: principal@digvijaycollege.com ☎: & Fax 07744-296331
College Code : 1901

सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती मनाई गई

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के इतिहास विभाग में सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. के.एल.टान्डेकर ने कहा कि सरदार पटेल कड़े अनुशासन के पक्षपाती थे। वे अनुशासनहीनता के कार्यों को सहन नही कर सकते थे। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उपर से वे रूखे निष्ठुर और अभिमानी से लगते थे। परन्तु भीतर से वे सरल स्वभाव के थे। विभागाध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने कहा कि सरदार पटेल दृढ़ संकल्प, के धनी थे। कठिन से कठिन परिस्थितियों में वे घबराते नहीं थे। उनमें दल संगठित करने की अद्‌भूत क्षमता थी। वे जीवन के व्यवहारिक पक्ष पर जोर देते थे। उन्होंने चर्चिल को जवाब देते हुए कहा "आप लोग यह सोचकर बोले कि आप स्वतंत्र भारत से बातचीत कर रहे हैं।"

हिरेन्द्र बहादुर ठाकुर ने कहा – 1927 में वारडोली सत्याग्रह हुआ, जिसका नेतृत्व सरदार पटेल ने किया। इसी समय जनता ने उनको सरदार की उपाधि से सुशोधित किया और उनकी गणना भारत के प्रमुख नेताओं में होने लगी। कार्यक्रम का संचालन एम.ए.पूर्व की छात्र प्रगति भूआर्य ने किया।